ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 73-75
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

"सूक्ति भाषा की क्रियाशीलता है"

अपूर्वा अवस्थी
असिसटेंट प्रोफेसर, नवयुग कन्या महाविद्यालय, राजेन्द्र नगर, लखनऊ, (उ0प्र0) भारत

Received- 27.04.2019, Revised- 03.05.2019, Accepted - 11.05.2019 E-mail: garg.shivansh7@gmail.com

सारांश : *सूक्ति भाव को कलात्मक रूप से प्रस्तुत करने की शैली है। शैली वह पद्धति या प्रकृति प्रदत्त स्वभाव या स्वरूप है, जो जड़ चेतन पशु–पक्षी मनुष्य सभी को प्राप्त है। स्वतः स्फुरित या अर्जित चेष्टा, मुद्रा अथवा भंगिता शैली के मौलिक लक्षण है। इसलिए शैली को ही व्यक्ति कहा गया है– ''Style is the man" व्यक्ति का स्वभाव और लक्ष्य ही शैली के गुण हैं। इसी तरह किसी प्राणी अथवा वस्तु का स्वरूप और स्वभाव– प्रभाव उसकी शैली–क्रियाशीलता से जुड़े रहते हैं। सूक्ति भाषा की क्रियाशीलता है। अतः वह भाषा अन्तर्निहित भाव की प्रवणता के कारण उसकी सर्वश्रेष्ठ शैली है। सूक्ति भावभिव्यक्ति की शैली है। अनुभूति को सुन्दरता के साथ प्रस्तुत करने में सूक्ति का सर्वाग योगदान है। उक्ति में निहित उद्देश्य, पृष्ठभूमि, भावभूमि शब्दचयन वर्ण मैत्री आदि भाषापरक तत्वों को समेटकर जब अभिव्यक्ति होती है तब वह सूक्ति बन जाती है।1*

कुंजी शब्द – कलात्मक रूप, प्रकृति, प्रदत्त, स्फुरित, अर्जित चेष्टा, भंगिता शैली, मौलिक लक्षण, सूक्तिभाषा।

सूक्ति वाणी का तप है। भगवान कृष्ण ने गीता में घोषित किया है– 'वाड्.मय तप उच्यते। समूचासाहित्य (वाणी) ही तपः स्वरूप है। इसलिए वाड्'मय को तप कहा जाता है। तप तापजन्य होता है। यह ताप दो प्रकार का होता है दुःखद और सुखद। दुखद ताप भौतिक क्लेशों से उत्पन्न होता है और सुखद ताप दूसरे के दुख को दूर करने हेतु दुःख अर्जित के वहन करने से होता है। चिकित्सक और कवि दूसरे के दुखों को दूर करने हेतु दुःख वहन करते हैं किन्तु वह पीड़ा शारीरिक क्लेश भी परिणामतः उन्हें सुखानुभूति कराता है। ठीक इसी प्रकार कवि साहित्यकार अपने लिए नहीं, अपने दुःख से प्रेरणा लेकर दूसरे के लिए लिखता है और दूसरे की पीड़ा को संवेदना–सहानुभूति के धरातल पर स्वयं खुद जीता है इस प्रकार दुखार्जित करते हुए भी दुःखमुक्ति की अनुभूति के कारण उसको आन्तरिक सुख होता है। इसलिए वाणी के द्वारा जब दूसरे के दुख (ताप) को दूर किया जाता है जब विद्ग्ध तपी हुई वाणी ही यह कष्ट कलेशार्दिक निवारण का काम कर सकती है। इसीलिए भगवान श्री कृष्ण ने वाणी को तप कहा है तपी हुयी वाणी से निसृत हुए वचन त्रिकाला बाधित सत्य होते हैं। उनका फल श्रोता को प्राप्त होता है। वाणी सत्य, शिव और सुन्दर होने के कारण कल्याणमयी और रमणीय होती है। इसीलिए वाणी को सूक्ति भी कहा गया है।2 'वाणी' का प्रवाह 'वाण' की तरह गतिशील तथा गम्भीर होता है। संतकबीर ने लिखा है– "कहत कबीर सोई सुनि जागै, सबद बान जेहि अन्तर लागे।" कबीर बीजक कबीर की मान्यता है कि बाण की तरह ही शब्द अन्तरम को बींधता है, माँजता है। इसलिए शक वाण है। वाण से कम नहीं है।3

सूक्ति भी वाण है। वाण की तरह जब अपने भाव की पैनी नोंक वाली बना कर यह उदित होती है तो संवाद की भूमि को आलोकित कर देती है। संवाद की भूमि–कर्णों–को इसकी गोचरता प्रकट हो जाती है। सूक्ति की सुभाषा से वाणी सुभाषित होती है। यही वाणी की श्री सुवास है। 'वचने का दरिद्रता' – भर्तृहरि महाराज का यह कथन सूक्ति की ओर इंगित करता है। आशय यह है कि यदि व्यक्ति वचन से ही दरिद्र हो गया, तो फिर उसके पास रहेगा क्या? वचन जैसे अनमोल रत्न जिन महानुभावों को मिला है वह वास्तव में धन्य है पूरें विश्व में उनका यश फैला हुआ है। वाणी रत्न है। इसलिए वह हद्य को आलोकित करती है। वाणी में प्रकाश है। सत्य का स्वरूप भी प्रकाश है। इसलिए सूक्ति कवि का सर्वोत्कृष्ट सत्य है। सूक्ति के सन्दर्भ में गीतोक्त यह कथन सटीक है –

'अनुद्वेगकरं वाक्यं – सत्यं प्रियहितं च सन्।'

अर्थात् जो वाक्य श्रोता के हृदय को उद्वेलित न करे, सत्य (यर्थाथ) युक्त हो, प्रिय और हितकारी हो वही सूक्ति है। "अप्रियस्य च पथस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।" अप्रिय और हितकारी वचन बोलने वाला संसार में न वक्ता सुलभ हैं और न श्रोता सुलभ हैं, परन्तु साहित्य का वचन भले ही अप्रिय हो किन्तु मंगलकारी होने के कारण उसको श्रोता भी सुलभ हो जाता है और बोलने वाला भी मिल जाता है। अप्रिय होने पर भी सूक्ति वचन मंगलकारी और हितकर होते हैं। सूक्ति हितकारी होती है इसीलिए सूक्ति को ही यदि साहित्य का पर्याय कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। सारा साहित्य हितेन सह सहित' निर्वचन के कारण हितकारी मंगलकारी है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है –

" मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवहु सो दशरथ अजिर

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

बिहारी।।"4

"मंगल का भवन ही अमंगलों को दूर करने वाला हुआ करता है। जो रमणीय–रमण करने योग्य है वही रमाने की कला में निपुण होगा। राम रमण करने के कारण ही राम नहीं है राम रमाने के कारण भी राम है। राम हमारे अन्तः करण सहित सभी इन्द्रियों में चेतना को रमाते है इसीलिए राम है साहित्य भी चेतना को द्रवीभूत करता है दशों इन्द्रियों (दशरथों) को द्रवीभूत करने वाले राम जब संवेदना के अजिर में मन और प्राणों के कच्चे आंगन में खेलने लगते हैं जब निश्चय ही मंगलप्रद हो जाते हैं उनकी रसमयी लीला साहित्य रसमयी चेतना के कारण नित्य नवीन है तथा रमणीय है रमणीय होने के कारण ही सुभाषित है और सुभाषित होने कारण सूक्ति है। सूक्ति का विश्लेषण जिन तत्वों के आधार पर करेंगें वे इसप्रकार है–

1. सूक्ति और सूक्त : सूक्ति का आधार सूक्त है। सूक्त में सूत्र अच्छा श्रेष्ठ, उक्त त्र कहा हुआ वचन समाहित रहता है ऐसा वचन ही ही सूक्त है मनस्तत्व को चित्तत्व से जोड़कर जब समग्र संतानभूति से कवि का ऋषित्व जुड़ता है तब मन की आँखों से देखा हुआ दृश्य प्रत्यक्ष हो उठता है और मन्त्रोचार होने लगता है। 'ऋषयः मन्त्र द्रष्टाः ऋषिगण ही मन्त्र देखने वाले होते है। वेद का सीधा प्रभाव संत वाणी पर परिलक्षित होता है– तू कहता कागद की लेखी, हौ कहता आँखन की देखी 1–जो अन्तश्चेतना की आँखे है वे ही सूक्त विधायिका है। तुलसी ने मानस की आँखों से मानस को देखने का प्रस्ताव किया है 2– इसीलिए वैदिक रिचाआ कों सूक्त कहते हैं सूक्ति और सूक्त का घनिष्ठ सम्बन्ध है वेद वचन सूक्त कहलाते हैं और इन सूक्तों को संरक्षित करके रखने के कारण सूक्ति साहित्य बनता है सूक्त ही सूक्ति रचने वाली श्रेष्ठ साहित्कार और साहित्य से भी होते हैं।5

2. सूक्ति और लोकोक्ति : लोकोक्ति, लोक सामान्य जन की रसपूर्ण व्यंजना पूर्ण एवं भावपूर्ण अभिव्यक्ति है लोकोक्ति को लोकबतकोला लोकवार्तादित संज्ञा से भी अभिहित किया गया है। लोक से तात्पर्य यहाँ अंचल से है। लोक में भिन्न–भिन्न स्थानों या क्षेत्रों को अंचल कहा जाता है इसीलिए लोक के लिए अचल शब्द का प्रयोग किया जाता है व्यवहार से अभिज्ञान का सम्बन्ध होता है लोक अपने अस्तित्व बोध से जुड़ा रहता है इसीलिए लोकोक्ति का महत्व लोकरीति लोक व्यवहार के लिए आवश्यक होता है यथा, ऊँट के मुँह जीरा, ही देने मात्र से लक्षणा शब्द शक्ति का अविलम्ब ग्रहण करने पर अर्थ निकलता है महाभोजी के सामने स्वत्य भोजन रखना। इसी प्रकार सूक्तियाँ लोकोक्तियाँ की सहचरियाँ है। लोके च वेदे च–के अनुसार जो कुछ लोक में घटित होता है वही वेद में वर्णित किया जाता है अतः लोक सूक्तियों का आद्य धरतल है।6

3. सूक्ति और संवाद : सम्यक वार्ताचार ही संवाद की कोटि में आता है। संवाद ही विचार विनमय का साधन है। यदि सूक्ति न हो, तो संवाद सुष्ठुता का अभाव होगा और परस्पर साहित्यिक जन सहृदय गुणज्ञ, मर्मारसिक साहित्यसेवी संवादिता–शून्य हो जायेंगे। इस दृष्टि से संवाद सूक्ति प्रधान होते हैं। संवादों की भाषा सामान्य सहृदय ही पहुंच से बाहर न हो इसीलिए सूक्तात्यात्मक होने से संवाद सहजग्राह्य बन जाते है। संवाद भाव संप्रेषण की परिधि में आते हैं। इसलिए इन्हें सूक्ति प्रधान बनाने का प्रयास किया जाता है सूक्ति से संवादों की भाषा भाव में सहज ग्रह प्रभाव में होकर गत्यात्मक बन जाती है। संवाद की जीवन्तता सूक्ति पर निर्भर है। इसीलिए साहित्यिक संवादों में सूक्ति का महत्व स्वयमेव सर्वविदित है।7

4. सूक्ति और वक्रोक्ति : 'वक्रोक्ति काव्यजीवितं' 1–काव्य का प्राण तत्व वक्रोक्ति है। भाव भंगिमा की सम्यक् अभिव्यक्ति कराने में वक्रोक्त को साधन रूप में स्वीकार किया गया है। सूक्ति तभी अच्छा निवर्चन करती है जब वह वक्रतापूर्ण हो। किसी बात को सीधे–सीधे कहना भाषा का काम है। किन्तु काम भाषा का कार्य भंगिमा पूर्वक कथन करना होता है। यह भंगिमा वर्ण, शब्द, (1) आचार्य वामन – वक्रोक्ति सम्प्रदाय

अर्थ, भाव आदि में स्पष्ट देखी जा सकती है इसीलिए जो साहित्य वक्रोक्ति प्रधान होता है उसमें सूक्ति का सौष्ठव द्विगुणित हो उठता है। सहत्र गुणित सूक्ति में सुन्दरता की संभावना बढ़ जाती है।8

5. सूक्ति और विदग्धता : विदग्धता, वाणी की विशिष्टता है, जिसमें विशिष्ट ज्वलनशीलता होती है। यह ज्वलनशीलता वाणी में पीड़ित व्यक्तियों के लिए शीतलता बन जाती है। प्रसाद जी ने इस विद्ग्धता की ओर इंगित किया है– शीतल ज्वाला जलती है, ईंधन होता दृग जल का यह शीतल ज्वाला ही विदग्ध–प्रवण काव्य "आँसू" की सम्यक् उद्गीथि है। विद्ग्ध अभिव्यक्ति के कारण सूक्तियों का उद्भव हुआ करता है। इसलिए प्राणवन्त कवियों की वैदग्धपूर्ण वाणी सूक्तियों की जननी कहलाती है। जो रसिक भावुक भाव दग्ध हो गये हैं उनकी मनोदशा का अद्भुत वैलक्षण्य सूक्तियों में दर्शनीय है। सूर की गोपियाँ उद्धव से कहती हैं– 'जीवन मुँहचाही को नीकौ।' अर्थात मुँह लगे लोगों का जीवन धन्य होता है यह विदग्धता व्यंगपूर्ण भाव की द्योतक है कुब्जा के प्रति इंगित करने वाली यह सूक्ति सार्वभौम सत्य का स्थापन करने में अग्रसर है। विदग्धता वाणी की सर्वोकृष्ट सम्मार्जित–परिमार्जितम

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

उर्जस्वित विद्या है। जिसे ऐसा कौन सा सहृदय है, जो नहीं स्वीकारेगा।9

6. सूक्ति और विचित्रता : विचित्रता काव्य की चमत्कृति का उज्जवल पक्ष है। काव्य में सन्निहित वस्तुचित्रण इसी विचित्रता का द्योतक है। काव्य वस्तु सामान्य वस्तु से भिन्न होती है। सामान्य काल रंग नहीं भी प्रयुक्त हो कालेपन का ही व्यक्त करेगा। परन्तु काव्यान्तर्गत प्रयुक्त हो कालेपन को ही व्यक्त करेगा। परन्तु काव्यान्तर्गत प्रयुक्त कालारंग 'श्याम रंग बनकर' प्रयुक्त होने पर लिप्त होने वाले या निमग्न होने वाले को काला नहीं करता अपितु उज्जवल बनाकर निखार देता है। यह उज्जवलता उसक पापविनिर्मुक्त होने का भी कारण बनता है। वस्तु चित्रण का वैचित्रय ही कथन को सूक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है। विचित्रता सूक्ति के प्रतिष्ठा में कारक घटक है सूक्ति में निहित चित्रण भाव भूमि को उर्वरक बनाने में सहायक होता है इसीलिए सूक्तियों की चित्रात्मकता श्लाघनीय है।10

7. सूक्ति और आशय : आशय वह तत्व है, जो काव्य के अंतःपक्ष से सम्बद्ध है। आशय से मन का भाव प्रकट होता है आशय सारगर्भित संचित भाव को कहा जाता है। आशय की संवाहिका होती है। सूक्तियाँ/मनुष्य के भावाकुलचित्त में संचित आशयों को सूक्तियाँ समाहित करके रखती है। आशय–भण्डारण की अनुपम शक्ति सूक्तियों में विद्यमान रहती है। आशय सूक्तियों का प्राणवत्व है। मनुष्य जीवन की सुदीर्घ यात्रा के भाव केन्द्रित आशयों को अनुस्यूत करना सूक्तियों का कार्य है। प्रसाद जी ऐसी ऐसी सूक्तियों के जनक है – जीवन – जीवन की पुकार है खेल रहा शीतल दाह,– एक लम्बे समय से जीवन में पानी का महत्व चला आया है यह पानी वास्तव में पानी है यह मनुष्य का तेजस्वी रूप है यह प्रतिष्ठा का प्रतीक कुछ भी हो उसकी यह शीतल ललक एक ऐसे दाह की जलन की ज्योतक है जिसमें मिलने की उत्कंठा का भावाशय विद्यमान है। सूक्ति भावों का आशय है इसलिए सूक्ति का आशय से गहन सम्बन्ध है।11

8. सूक्ति और अभिव्यक्ति : अभिव्यक्ति साहित्य को व्यक्त रूप है। "अनुभूति साहित्य' का अव्यक्त रूप है। सूक्ति अभिव्यक्ति मूलक होने के कारण सर्वाधिक ग्राहय साहित्य है। अतः सूक्ति का अभिव्यक्ति के साथ प्रगाढ़ सम्बन्ध है। अभिव्यक्ति प्रायः सूक्ति मूलक होने पर श्रेष्ठ उद्‌गार की कारक बन जाती है। इसीलिए कवियों ने अपनी सान्द्र अनुभूतियों को सूक्ति परक बनाकर प्रस्तुत किया है।

9. सूक्ति और अतिषय : अतिशय काव्य की महत्ता को बढ़ाने वाला गुण है, जो सूक्ति में अन्तर्निहित रहता है। सौन्दर्य और रस को अतिशय करने वाली काव्य अभिव्यक्ति सूक्तिमयी होती हैं। यथा – "सौन्दर्य शैली राई सा, जिसपर बारी बलिहारी" – (प्रसाद) नायिका के मुख पर उदित हुआ तिल कवि की दृष्टि में राई के बराबर होने पर भी सौन्दर्य शैल–सुन्दरता का पर्वत–बन गया है। इस तिल का सुन्दरता के लिए पर्वत बन जाना अतिशय पूर्ण है। अतः सूक्ति अतिशय से परिपूर्ण हुआ करती है।12

10. सूक्ति और सारसंग्रह : सूक्तियों का लक्ष्य और तात्विक स्वरूप, सार संग्रह करना रहा है। सार को अपने अन्दर समाहित करना सूक्ति का धर्म है सार तथ्य अथवा तत्व को संग्रहीत करना ही सूक्ति का विशिष्ट गुण है। सार ग्रहण करके कवियों ने सूक्तियों में उन्हें निबद्ध किया है। इसीलिए सूक्तियाँ सार संग्रह का मूर्तिमान रूप है। हमारे साहित्यकारों ने सूक्तियों को काव्य का प्रकाश माना है। इसीलिए वे सारमयी है।

निष्कर्षतः सूक्ति का तात्विक मूल्यांकन एक ऐसे लक्ष्य को प्राप्त कराने वाला है जहाँ पहुँचकर सूक्ति का अन्तरिक्ष प्रत्यक्ष गोचर हो जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सूक्ति सागरः रमा शंकर गुप्त
2. सूक्ति भाण्डागारम् – निर्णय सागर प्रेस बम्बई
3. कबीरदासः बीजक
4. रामचरितमानसः बाल काण्ड
5. प्राकृत सुभाषित संग्रह
6. प्राकृत सूक्ति सरोज
7. सूक्ति भाण्डागारम् – निर्णय सागर प्रेस बम्बई
8. धम्मपद
9. वृहद हिन्दी शब्द कोशः डॉ0 हरदेव बाहरी
10. सूक्ति भाण्डागारम् – निर्णय सागर प्रेस बम्बई
11. सूक्ति भाण्डागारम् – निर्णय सागर प्रेस बम्बई
12. आदर्ष हिन्दी शब्द कोशः पंडित रामचन्द्र पाठक

*****